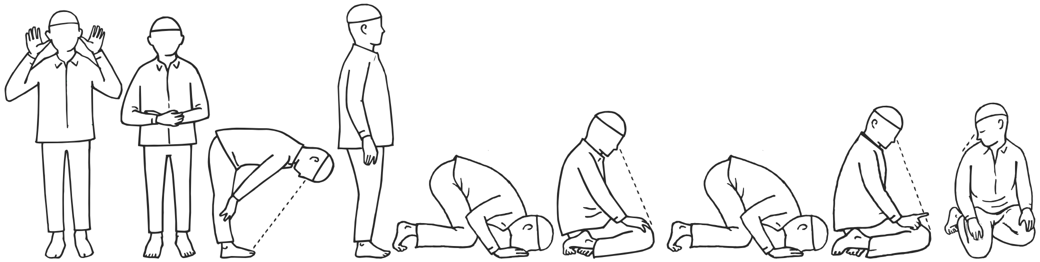
# नमाज़

## आपकी सोच से आसान

Version 1.5



# इस किताब के बारे में

इस किताब का मक्सद ये समझाना है कि नमाज़ को अदा करना बहुत आसान है।
आसान तस्वीरों और आसान ज़बान से नमाज़ कें अलग अलग अरकान को याद रखना बहुत आसान बना दिया गया है।
कुछ ही अरकान अदा करने से बुनियादी नमाज़ अदा हो सकती है।
नमाज़ को सही तरीके से अदा करने में यह किताब मदद करेगी और वह तमाम लोग जो नमाज़ नहीं पढ़ते उन्हें नमाज़ पढ़ने पर आमादा करने में भी मददगार साबित होगी।
इस किताब को आपके जेब में रखने लायक बनायी गई है ताकि इसे आसानी से अपने साथ ले जा सकें। इस बात का खास ख्याल रखें कि, पाखाना जाते वक्त इसे अपने साथ न ले जाएँ। इस किताब को बिना गुस्ल या वुजू के भी अपने साथ रख सकते हैं, इसे छू सकते हैं, इस किताब के किसी भी हिस्से को यानी सुरह, आयत या दुआ पढ़ भी सकते हैं।
(वुजू या गुस्ल इसी सूरत में ज़रूरी है जब आप कुरआने करीम को छूए)

*अल हिदाया, माअद्दारीया, जिल्द 1, पेज नं. 49



# नमाज़ का वक्त और रक्अ़त

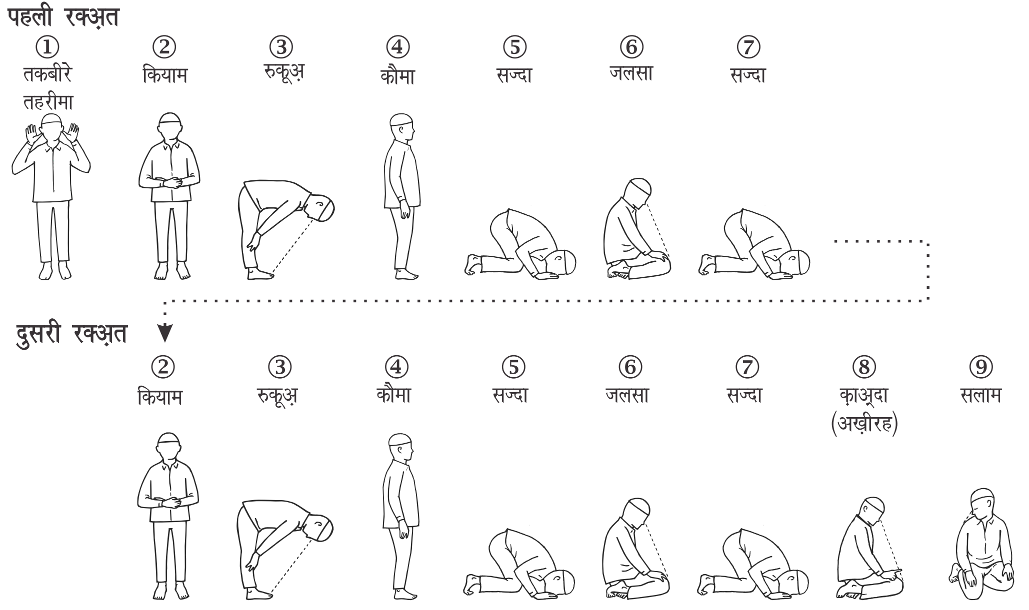
| नमाज़ के नाम | सुन्नत | फ़र्ज़ | सुन्नत | नफ्ल* | वित्र वाजिब | नफ्ल* | कुल रक्अ़त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फज्र | 2 | 2 | | | | | 4 |
| ज़ोहर | 4 | 4 | 2 | 2 | | | 12 |
| असर | 4# | 4 | | | | | 8 |
| मग़रिब | | 3 | 2 | 2 | | | 7 |
| ईशा | 4# | 4 | 2 | 2 | 3 | 2 | 17 |
| जुमा | 4 | 2 | 4, 2 | 2 | | | 14 |

* बेहतर होगा कि नफ्ल नमाज़ों की जगह छूटी हुई फर्ज़ नमाज़ें पढ़लें।
# सुन्नते-ग़ैर-मौक़ीदह - यानी वह नमाज़ें जिनका पढ़ना ज़रूरी नहीं। पढ़ लिया तो सवाब मिलेगा।

# नमाज़ का तरीक़ा



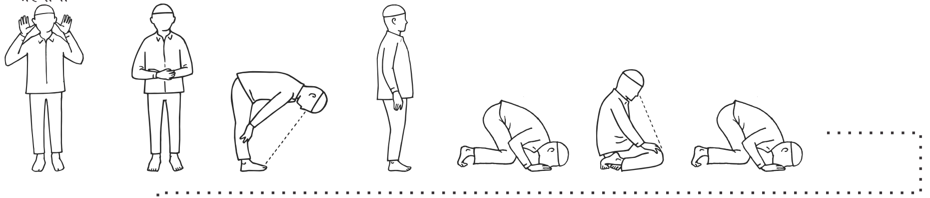
## 2 रक्अ़त वाली नमाज़



# 3 रक्अ़त वाली नमाज़

## पहली रक्अ़त

① तकबीरे तहरीमा | ② कियाम | ③ रुकूअ़ | ④ कौमा | ⑤ सज्दा | ⑥ जलसा | ⑦ सज्दा



## दुसरी रक्अ़त

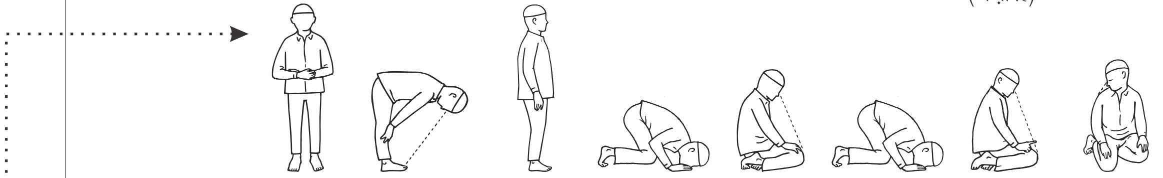
② कियाम | ③ रुकूअ़ | ④ कौमा | ⑤ सज्दा | ⑥ जलसा | ⑦ सज्दा | ⑧ क़ाअ़्दा





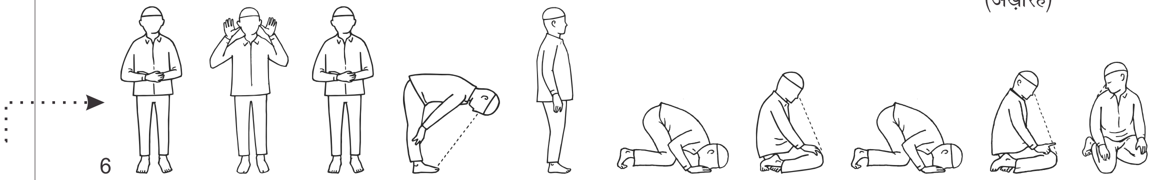
## तीसरी रक्अ़त

② कियाम | ③ रुकूअ़ | ④ कौमा | ⑤ सज्दा | ⑥ जलसा | ⑦ सज्दा | ⑧ क़ाअ़्दा (अख़ीरह) | ⑨ सलाम



## वित्र की तीसरी रक्अ़त

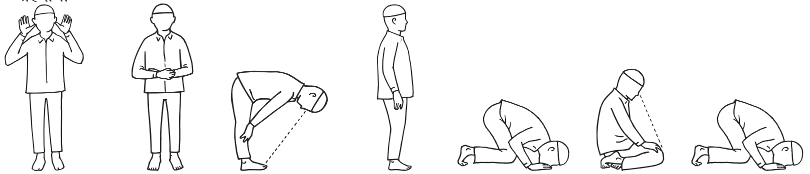
② कियाम | तकबीरे कुनूत | कियाम | ③ रुकूअ़ | ④ कौमा | ⑤ सज्दा | ⑥ जलसा | ⑦ सज्दा | ⑧ क़ाअ़्दा (अख़ीरह) | ⑨ सलाम



# 4 रक्अ़त वाली नमाज़

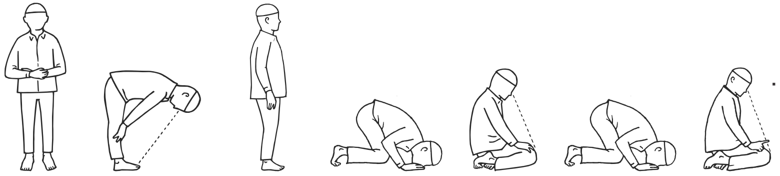
## पहली रक्अ़त

① तकबीरे तहरीमा
② कियाम
③ रुकूअ़
④ कौमा
⑤ सज्दा
⑥ जलसा
⑦ सज्दा



## दुसरी रक्अ़त

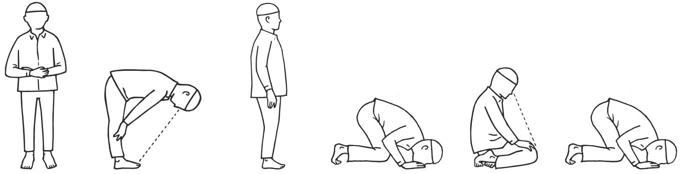
② कियाम
③ रुकूअ़
④ कौमा
⑤ सज्दा
⑥ जलसा
⑦ सज्दा
⑧ क़ाअ़दा





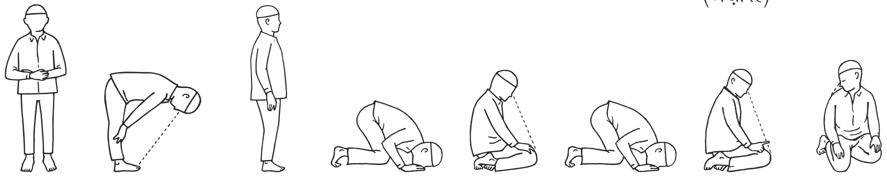
## तीसरी रक्अ़त

② कियाम
③ रुकूअ़
④ कौमा
⑤ सज्दा
⑥ जलसा
⑦ सज्दा



## चौथी रक्अ़त

② कियाम
③ रुकूअ़
④ कौमा
⑤ सज्दा
⑥ जलसा
⑦ सज्दा
⑧ क़ाअ़दा (अख़ीरह)
⑨ सलाम



## फ फर्ज़ : (जिस का पढ़ना निहायत ज़रूरी है)

- नमाज़ में फराइज़ का अदा करना बेहद ज़रूरी है, इसका छोड़ना जाइज़ नहीं। अगर नमाज़ में कोई फर्ज़ छूट जाए तो इस नमाज़ को दोबारा पढ़ना ज़रूरी है।

## व वाजिब : (जिस का पढ़ना ज़रूरी है)

- वाजिब आमाल का अदा करना ज़रूरी है। अगर कोई वाजिब अमल छूट जाए तो आप को सज्दा सहूव करना होगा, यानी नमाज़ के आख़िर में दो और सज्दे करने होंगे।
  अगर सज्दा सहूव नहीं किया तो नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी।

## स सुन्नत : (जिसे पढ़ना बेहतर है)

- नमाज़ मे सुन्नत की अदायेगी से नमाज़ और भी बेहतर हो जाती है।
  और इसे अदा करना बेहतर है।
- अगर नमाज़ में सुन्नतें छुट जाये तो भी नमाज़ हो जायेगी।



## फ फर्ज़ : (जिस का पढ़ना निहायत ज़रूरी है)

नमाज़ के अन्दर पाँच फराइज़ हैं।

1) **कियाम :** इतनी देर तक खड़े होना कि क़िराअत का फर्ज़ अदा हो जाए।

2) **क़िराअत :** नमाज़ में कम से कम तीन छोटी आयतों या तीन आयतों के बराबर एक आयत का पढ़ना ज़रूरी है।

3) **रुकूअ़ :** यानी इस क़दर झुकना कि हाथ घुटनों तक पहुँच जाएँ।

4) **सुजूद (सज्दा) :** इस क़दर ज़मीन पर झुकना कि घुटना, हथेली, नाक, पेशानी और पैरों की कम से कम एक उँगली ज़मीन पर टिकी रहे।

5) **क़ाअ़दा अख़ीरह : (आख़री क़ाअ़दा)** नमाज़ की आखरी रक़अत में पूरा तशहहुद पढ़ने के बराबर तक बैठना (यानी इतनी देर तक बैठना कि अत्तहीयात से लेकर अब्दुहू व रसूलू तक पढ़ सके)

## व वाजिबात : (जिनका नमाज़ में अदा करना ज़रूरी है)

नमाज़ के अंदर के कुछ ज़रूरी वाजिबात नीचे दिए गए हैं

- तकबीरे तहरीमा में ''अल्लाहु अकबर'' कहना।
- सुरह फातिहा पूरा पढ़ना।
- सुरह फातिहा के बाद कोई सुरह या (कम से कम) तीन आयत का मिलाना। अगर फर्ज़ नमाज़ है तो शुरू की दो रक्अत में, अगर वित्र, सुन्नत और नफ्ल है तो हर रक्अत में सुरह फातिहा के साथ कोई सुरह या आयत मिलाना वाजिब है।
- कोई सुरह या आयत मिलाने से पहले सिर्फ एक बार ही अलहम्दो यानी सुरह फातिहा पढ़ना।
- क़िराअत खत्म होते ही बिना देर किये रुकूअ में जाना।
- क़ौमा करना यानी रुकूअ़ के बाद सीधे खड़े होना।
- एक सज्दे के बाद दुसरे सज्दा करने में ज़्यादा देर न करना यानी दोनों सज्दे के बीच इतनी देर न करे कि तीन बार सुब्हान अल्लाह पढ़ा जा सके।
- रुकूअ़, क़ौमा, सज्दा और जल्सा के बीच एक बार सुब्हान अल्लाह पढ़ सके इतनी देर रुकना।
- सज्दे की हालत में हर पैर की तीन उँगलियों का ज़मीन से टिके रहना इस तरह कि उँगलियों का रुख क़िब्ला की तरफ हो।
- जल्सा करना यानी दो सज्दों के बीच बैठना।



- क़ाअ़दा ऊला में बैठना, दो रक्अ़त से ज़्यादा वाली नमाज़ों में दुसरी रक्अ़त में बैठना चाहे नफ्ल हो।
- चार रक्अ़त वाली नमाज़ों के दोनों क़ाअ़दा में मुकम्मल तशह्हुद पढ़ना, अगर तशह्हुद का एक लफ्ज़ भी पढ़ने से रह गया तो वाजिब छूट जाएगा।
- दोनो तरफ सलाम करने के लिए लफ्ज़ ''सलाम'' वाजिब है। ''अ़लैकुम व रहमतुल्लाह'' वाजिब नहीं।
- दुआए कुनूत के लिए तकबीर कहना यानी वित्र की आखरी रक्अ़त में हाथ उठाते ''अल्लाहु अकबर'' कहना वाजिब है।
- वित्र में दुआए कुनूत का पढ़ना।
- हर फर्ज़ व वाजिब का इसकी जगह होना।
- हर रक्अ़त में सिर्फ एक रुकूअ़ और दो ही सज्दे करना।
- सिर्फ दुसरी और आख़री रक्अत मे क़ाअदह के लिए बैठना वाजिब है।
- नमाज़ मे किसी भी फर्ज़ या वाजिब अ़मल के बीच इतनी देर न करना कि इसमे तीन बार ''सुब्हान अल्लाह'' पढ़ा जा सके।
- अगर इमाम क़िराअत कर रहा हो चाहे तेज़ आवाज़ से या ख़ामोसी से, मुक्तदीयों का ख़ामोश रहना वाजिब है।

## नमाज़ की नीयत करना

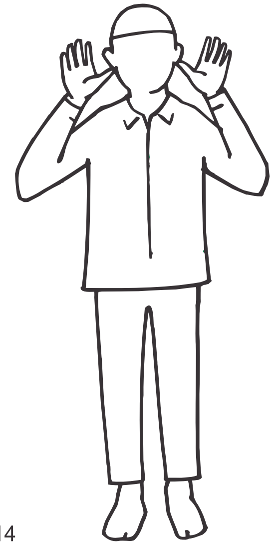
वुज़ू की हालत में क़िब्ला रुख़ खड़े हों, दोनों पैरों के बीच चार उँगलियों का फासला हो, अब जो नमाज़ पढ़ने वाले हैं उसकी नीयत करें ।
अगर ज़बानी नीयत कर लें तो बेहतर है (नही तो दिल से नीयत कर लेना काफी है)

नमाज़ की नीयत बाँधने के लिए निचे दिये गये तरीक़े को अपनाए ।

नीयत की मैने
{दो या तीन या चार} रक्अ़त
{फर्ज़ या वाजिब या सुन्नत या नफ्ल या नमाज़े जुम़ा}
नमाज़े {फज्र या ज़ोहर या असर या मग़रिब या इशा} की
वास्ते अल्लाह के मुँह मेरा क़ाबा शरीफ के तरफ
अगर बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना हो तो इतना और कहले कि “पीछे इस इमाम के”।



## ① व तकबीरे तहरीमा



स दोनों हाथों को कानों की लौ तक उठाएँ, और अँगूठें से कानों की लौ को छुले ।

इस दौरान उँगलियां न बहुत ज़्यादा फैली रहें न एकदम मिली रहें बल्कि आम तौर पर रहें और चेहरा क़िब्ला की तरफ होना चाहिए इस मौके पर नज़र सज्दे के जगह पर रखें।

व

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

“अल्लाहु अकबर”
अल्लाह सबसे बड़ा है

## ② फ क़ियाम



तकबीरे तहरीमा के बाद पहले बायाँ हाथ नाफ के ऊपर रखें उसके बाद दायाँ हाथ के अँगूठे और छोटी उँगली से बाएँ हाथ की कलाई पकड़ लें बीच की तीन उँगलीयाँ बाएँ हाथ की कलाई पर सीधी रखें। नज़र को सजदे की जगह रखें।
अब सना फिर सुरह फातिहा पढ़ें।

### सना

स

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्-म व बि-हम्दि-क वतबा-र-कस्मु-क
व तआला जद्दु-क वला इला-ह ग़ैरु-क ०

पाक है तू ऐ अल्लाह मैं तेरी हम्द करता हूँ तेरा नाम बरकत वाला है। और तेरी शान बहुत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।



स

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाही मिनश्शैतानिर्रजीम ०
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ शैतान मरदूद से।
अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत महेरबान रहमत वाला है

### सुरह फातिहा

व

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ
اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ ؑ

अलहम्दु लिल्लाही रब्बील् आ-लमीन ०
अर्रहमानिर्रहीम०
मालिकि यौमिद्दीन०
इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तईन ०
इह्दिनस्-सिरा-तल मुस्तक़ीम ०
सिरातल-लज़ी-न अन्अम्-त अ़लैहिम
ग़ैरिल मग़ज़ुबि अ़लैहिम
व-लज़-ज़ाल्लीन ० (आमीन)

सब खूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालों का।
बहुत महेरबान रहमत वाला है, रोज़े जज़ा का मालिक।
हम तुझी को पूजे और तुझी से मदद चाहें। हमको सीधा रास्ता चला,
रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया।
न उनका जिन पर गज़ब हुआ। और न बहके हुओं का।

**नोट** : अगर आप इमाम के पीछे बा जमाअत नमाज़ पढ़ रहें हैं तो सिर्फ सना पढ़ें।

सुरह फातिहा पढ़ने के बाद कुरआने करीम से कम से कम तीन छोटी आयत या तीन छोटी आयतों के बराबर एक बड़ी आयत क़िराअत कर लें।
वाजिब, सुन्नत और नफ्ल नमाज़ों में हर रकअ़त में सुरह फातिहा के बाद कोई सुरह या आयत मिलाना चाहिए।

**नोट** :- फर्ज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकअ़त में सुरह फातिहा के बाद कोई सुरह या आयत की क़िरअत नहीं करनी है।

*इसके अलावा कोई और सुरह या आयत भी पढ़ सकते है।

सुरह इख़्लास*

फ

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ۚ
اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ

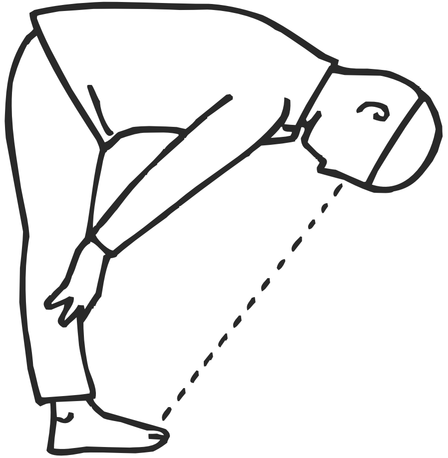
कुल हुवल्लाहु अ-हद् ०
अल्लाहुस्-स-मद ०
लम् यलिद् व-लम् यू-लद ०
व-लम् यकुल्लहू कुफु-वन् अ-हद् ०

तुम फरमाओ वो अल्लाह है वो एक है।
अल्लाह बे नियाज़ है।
न उसकी कोई औलाद और न वो किसी से पैदा हुआ।
और न उसके जोड़ का कोई।



③ फ रुकूअ़

स اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط कहते हुए रुकूअ़ में जायें



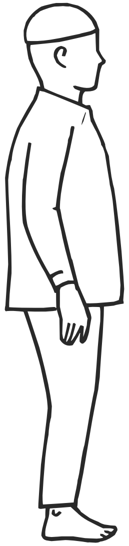
क़ियाम के बाद रुकूअ़ के लिए झुकना फर्ज़ है। इस क़दर कि दोनों हाथ की हथेलियाँ घुटनों पर रहें, उँगलियाँ फैली रहें और उँगलियाँ से घुटनों को पकड़ लें। पीठ बिल्कुल सीधी रहे इस तरह कि अगर पीठ पर पानी का गिलास रखें तो न गिरे।
इस मौक़े पर निगाह पैर के दोनों अँगूठों के बीच में रहे।

रुकूअ़ में जाने के बाद यह तस्बीह़ कम से कम तीन बार पढ़ें।

स

سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ
सुब्हा-न रब्बियल अ़ज़ीम ०
पाक है मेरा परवरदिगार अ़ज़मत वाला।

## ④ स कौमा



रुकूअ़ से उठने के बाद क़ौमा में सीधे खड़े हो जाएँ। दोनों हाथ सीधा छोड़ दें और निगाह सज्दे की जगह पर रखें।

रुकूअ़ से उठते वक्त कहें।

स

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه

समिअल्लाहु लिमन ह़-मिदह

अल्लाह ने उसकी सुन ली जिसने उसकी तारीफ की।

फिर जब सीधे खड़े हो जायें तो कहें

स

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْد

रब्बना व ल-कल ह़म्द

ऐ हमारे परवरदिगार सब तारीफ तेरे ही लिए हैं।



## ⑤ फ सज्दा

स सज्दे में जाते हुए اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط कहें

पहले घुटने ज़मीन पर रखें फिर दोनों हाथ फिर नाक फिर पेशानी। सज्दे के दौरान पेट रानों से और दोनों बाज़ू बग़ल से न मिले हों। दोनों हाथ और पैर की उँगलियाँ क़िब्ला की तरफ रहना चाहिए।

व हर पैर की कम से कम तीन उँगलीयाँ ज़मीन पर टिकी होनी चाहिए



सज्दे में जाने के बाद कम से कम तीन बार यह तस्बीह पढ़ें।

स

سُبْحٰنَ رَبِّىَ الْاَعْلٰى

सुब्ह़ाना रब्बियल अअ़्ला ०

पाक है मेरे परवरदिगार बहुत बुलन्द।

## ⑥ व जलसा

स اَللّٰهُ اَكْبَرُ (अल्लाहु अकबर) कहते हुए सज्दे से उठें और अच्छे से बैठ जाइए।





## ⑦ व सज्दा

स सज्दे में जाते हुए اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहें

दुसरे सज्दे में भी यही तस्बीह कम से कम तीन बार पढ़ें ।

स سُبْحٰنَ رَبِّىَ الْاَعْلٰى

सुब्हाना रब्बियल अअ्ला ०
पाक है मेरा परवरदिगार बहुत बुलन्द ।

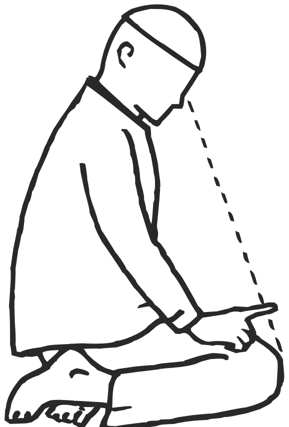


पहली रक्अ़त पढ़ लेने के बाद अब दुसरी रक्अ़त के लिए सीधे खड़े हो जाइए । पहले ''बिस्मिल्लाह'' पढ़ें फिर सुरह फातिहा इसके बाद कोई दुसरी सुरह पढ़ लें, फिर तकबीर कहते हुए रुकूअ़ करें, सज्दा करें, जैसे पहली रक्अ़त में किया था ।

⑧ **व** **क़ाअ़्दा** **फ** **क़ाअ़्दा आख़िरा**

दुसरी रकअ़त के दुसरे सज्दे के बाद

**स** اَللّٰہُ اَکۡبَرُؕ (अल्लाहु अकबर) कहते हुए काअ़दा में बैठ जाएँ फिर तशह्हुद पढ़े ।



### तशह्हुद

**व**

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ ؕ اَلسَّلَامُ

عَلَيۡكَ اَيُّهَاالنَّبِىُّ وَرَحۡمَةُاللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَيۡنَا

وَعَلٰى عِبَادِاللّٰهِ الصّٰلِحِينَ ؕ اَشۡهَدُاَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَ

اَشۡهَدُاَنَّ مُحَمَّدًاعَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ ؕ

अत्तह़ियातु लिल्लाहि वस-सला-वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लै-क अय्युहन-नबिय्यु व रह़मतुल्लाहि व ब-र कातुहू ० अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबा-दिल्लाहिस् सालिहीन अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ।

तमाम क़ौली फेअ़्ली और माली इ़बादतें अल्लाह ही के लिए हैं, सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमतें और बरकतें । सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़्बूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बंदे और रसूल हैं।



अगर ये काअ़दा अख़ीरह है, यानी की आख़री रक्अ़त का काअ़दा तो तशह्हुद के बाद दुरुदे इब्राहिम और दुआए मासूरा पढ़ें, नही तो अगली रक्अ़त के लिए खड़े हो जायें ।

### दुरुदे इब्राहिम

**स**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍكَمَاصَلَّيۡتَ عَلٰٓى

اِبۡرَاهِيۡمَ وَّعَلٰٓى اٰلِ اِبۡرَاهِيۡمَ اِنَّكَ حَمِيۡدٌمَّجِيۡدٌ ؕ

اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍكَمَابَارَكۡتَ عَلٰٓى

اِبۡرَاهِيۡمَ وَّعَلٰٓى اٰلِ اِبۡرَاهِيۡمَ اِنَّكَ حَمِيۡدٌمَّجِيۡدٌ ؕ

अल्ला-हुम्-म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव् व अ़ला आलि मुह़म्मदिन कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्-न-क ह़मीदुम्-मजीद ० अल्लाहुम्-म बारिक अ़ला मुह़म्मदिंव् व अ़ला आलि मुह़म्मदिन कमा बारक्-त अ़ला इब्राही-म व अ़ला आलि इब्राही-म इन्-न-क ह़मीदुम्-मजीद ०

ऐ अल्लाह दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुह़म्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और उनकी आल पर जिस तरह तूने दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहिम अ़लैहिस्सलाम पर और उनकी आल पर । बेशक तू सराहा हुआ बुज़ुर्ग है । ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल कर हमारे सरदार पर और उनकी आल को जिस तरह तूने बरकत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहिम और उनकी आल पर बेशक सराहा हुआ बुज़ुर्ग है।

### दुआए मासूरा*

**स**

اَللّٰهُمَّ اِنِّىۡ ظَلَمۡتُ نَفۡسِىۡ ظُلۡمًا كَثِيۡرًا وَّلَايَغۡفِرُ

الذُّنُوۡبَ اِلَّآاَنۡتَ فَاغۡفِرۡلِىۡ مَغۡفِرَةًمِّنۡ عِنۡدِكَ

وَارۡحَمۡنِىۡ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡغَفُوۡرُالرَّحِيۡمُ ؕ

अल्लाहुम्-म इन्नी ज़लम्तु नफ़सी ज़ुल्-मन कसीरंव्-वला यग़फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब-इल्ला अन्-त फ़ग़-फ़िर ली मग़फ़ि-र-तम मिन इ़नदि-क वर-ह़म्नी इन्-न-क अन्-तल ग़फ़ूरु-र्रहीम ०

ऐ अल्लाह बेशक मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया और तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्शने वाला नहीं, अपनी खास बक्शिश से मुझको बक्श दे और मुझ पर रहम कर बेशक तु ही बक्शने वाला महेरबान है।

*नोट : इसके अ़लावा दुसरी दुआ़ए मासूरा भी पढ़ सकते है ।

## ⑨ व सलाम



सर को सीने की तरफ झुकाएँ फिर धीरे से पूरे दाएँ तरफ सलाम फेरें। निगाह दाएँ कंधे पर हो और कहें

स व

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाह

तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रह़मत

अब सर को सीने की तरफ झुकाते हुए धीरे से बाएँ तरफ सलाम फेरें निगाह बाएँ कांधे पर हो और कहें

स व

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

अस्सलामु अ़लैकुम व रह़मतुल्लाह

तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रह़मत



**नोट** : दोनों तरफ सलाम फेरते वक़्त सलाम कहना वाजिब है और अ़लैकुम व रह़मतुल्लाह कहना सुन्नत है।



## सज्दाए सह्व

तशह्हुद पढ़ने के बाद सिर्फ दाएँ तरफ सलाम फेरें, उसके बाद स्टेप नम्बर 5 से 9 दोहराकर नमाज़ पूरी करें।
अगर नमाज़ में एक से ज़्यादा वाजिबात छूट गये तो भी सिर्फ एक बार ही सज्दा सह्व करें।
अगर सज्दा सह्व करते वक़्त कोई ग़लती हुई तो दोबारा सज्दा सह्व की ज़रूरत नहीं।

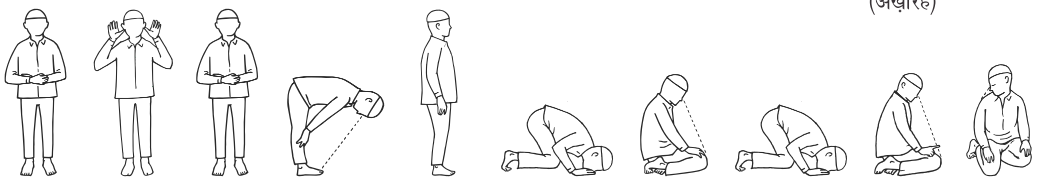
⑤ सज्दा ⑥ जलसा ⑦ सज्दा ⑧ क़ाऊ़दा (अख़ीरह) ⑨ सलाम



# वित्र का तरीका

## वित्र की तीसरी रक्अ़त

② क़ियाम | तकबीरे क़ुनूत | क़ियाम | ③ रुकूअ़ | ④ क़ौमा | ⑤ सज्दा | ⑥ जलसा | ⑦ सज्दा | ⑧ क़ाअ़दा (अख़ीरह) | ⑨ सलाम



वित्र में तीन रक्अ़त होती हैं ।

दुसरी रक्अ़त में तशह्हुद (अत्तहीयात) पढ़ने के बाद तीसरी रक्अ़त के लिए क़ियाम में खड़े हो जाएं ।
अब सुरह फातिहा और कोई सुरह या आयत पढ़े जैसा की क़ियाम में बताया गया है ।

व

اَللّٰهُ اَكْبَرُ "अल्लाहु अकबर" (तकबीरे कुनूत) कहते हुए दोनों हाथों को कान की लौ तक उठाकर दोबारा हाथ बाँध लें । अब कियाम की हालत में सिर्फ दुआ़ए कुनूत पढ़ें ।



## दुआ़ए कुनूत

व

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ
وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ
عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَ نَشْكُرُكَ وَلَا
نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
يَّفْجُرُكَ ۝ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ
نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى
وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى
عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۝

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्तइ़नु-क व नस्तग़-फ़िरु-क व नुअ्मिनु बि-क व न-त-वक्-कलु अ़लै-क व नुस्नी अ़लैकल ख़ैर, व नश-कुरु-क वला नक-फुरु-क व नख़-लउ़ व नत-रुकु मंय-यफ़-जुरुक, अल्लाहुम्-म इय्या-क नअ़्बुदु व-ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नस्-अ़ा व नह़-फिदु व नरजू रह़-म-त-क व नख़शा अ़ज़ा-ब-क इन्-न अज़ा-ब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुल-ह़िक ०

ऐ अल्लाह हम तुझसे मदद चाहते हैं और तुझसे बख़्शिश माँगते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरी बहुत अच्छी त़ारीफ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी ना शुक्री नही करते और अलग करते हैं और छोड़ते हैं उस शख़्स को जो तेरी नाफरमानी करे ऐ अल्लाह हम तेरी ही इ़बादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और तेरी ही तरफ दौड़ते और ख़िदमत के लिए हाज़िर होते हैं और तेरी रह़मत के उम्मीदवार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब काफिरों को मिलने वाला है ।

**नोट** : आपको दुआ़ए कुनूत याद नही है तो ये दुआ भी पढ़ सकते है ।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ एक बार पढ़े ।

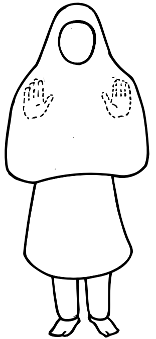
या फिर اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ तीन बार पढ़े । या फिर يَا رَبِّىْ तीन बार पढ़े ।

दुआ़ए कुनूत के बाद रुकूअ़, क़ौमा, सज्दा, जल्सा, सज्दा, क़ाअ़दा अख़ीरह और सलाम से नमाज़ पूरी करलें ।

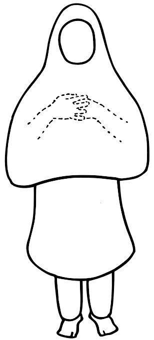
# औरतों के लिए नमाज़ का तरीका

औरतों और मर्दों के नमाज़ के तरीके में बहुत ही कम फर्क़ है ।

तकबीर के लिए हाथों को सिर्फ अपने कंधों तक उठाएं । हाथों को पर्दे में छुपाये रखें ।

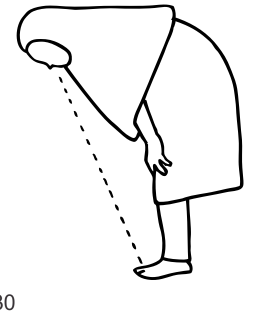


क़ियाम में अपने हाथों को छाती के ऊपर रखें । सीधे हाथ को उल्टे हाथ पर बिना पकड़े बस रखें रहें । उंगलियों को न ज़्यादा कसें न ज़्यादा ढ़ीला रखें । हाथों को पर्दे में छुपाये रखें ।

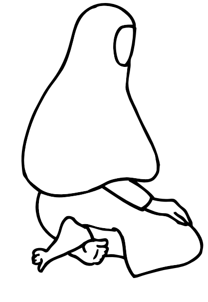


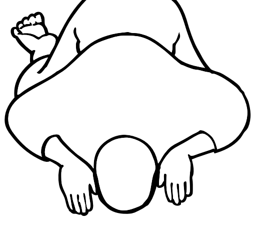


रुकूअ़ में औरत बस इतनी झुके की हाथों को घुटनों पर रख ले । बाहों को जिस्म के क़रीब रखें और उंगलियों को न ज़्यादा कसें न ज़्यादा ढ़ीला रखें ।



सज्दे में औरत ज़मीन पर ही बैठ जाए अपने पैरों पर न बैठे । दोंनों पैर दायीं तरफ से निकलें हुए हों । फिर बिना उठे बस आगे इस तरह झुक जाये, कि पेट जांघों से मिल जायें । पूरे जिस्म को समेट लें ।





# नमाज़

आपकी सोच से आसान

इस किताब को मुमकिम करने में इन जानकार लोगों की मदद रही है ।

**मुहि़युद्दीन मुह़म्मद अशरफी**
(अशरफिया अरबी कॉलेज केरला)

**मुह़म्मद मोइ़नुद्दीन हिदावी**
(दारुल हुदा इसलामिक युनिवर्सिटी केरला)

**मुह़म्मद ह़फीज़ अशरफी**
(मुबल्लिग़ सुन्नी दा़वते इसलामी मुंबई)

**वसीम अह़मद अ़त्तारी/सर्फराज सय्यद/ख़ान इश्तियाक़ ह़सन**
(ग्राफिक डिज़ाइनर)

**सिद्दीक़ी नदीम अह़मद**
(प्रिन्टींग इंतेज़ामात)

**प्रकाश जोशी**
(तस्वीर)

हम इनके बेहद मश्कूर हैं । और उन तमाम मालूम न मालूम हज़रात के भी मश्कूर हैं जिन्होंने इस अहम मक़सद के लिए काम किया।

हमारी यह कोशिश रही है कि नमाज़ पढ़ने के तरीक़े को आसान बना कर पेश किया जाए ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग नमाज़ पढ़ने के लिए आमादा हों । इस किताब में बताये गये तरीके, तस्वीर और लिखाई को सही सही पेश करने की हर मुमकिम कोशिश की गई है । फिर भी अगर कोई ग़लती, काबिले इस्लाह बात रह गयी हो तो ज़रूर हमें ईमेल के ज़रिए बताए

**feedback@true*namaz*.com**

साथ ही गलती की निशानदही और इस्लाह़ की तफ्सील बतायें । यह किताब एक नेक और अह़म मक़सद के लिए तैयार की गई है । इसे बिना कोई फेर बदल के छापा जा सकता है । किसी भी तरह का फेर बदल करने से पहले इज़ाजत लें ।

यह किताब हमारी वेबसाइट पर भी है । जहाँ से डाउनलोड और प्रिन्ट भी किया जा सकता है ।

यह किताब ‘बहारे शरीअत’ और ‘हिदाया’ की रोशनी में तैयार की गई है ।

नई जिल्द और तरजुमा के लिए हमारी वेबसाइट को देखते रहें ।

**true*namaz*.com**